PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 10, ISSUE 1

स्टार्टअप योजना :

आत्मनिर्भर भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए वरदान

डॉ. रोहित अग्रवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर,वाणिज्य विभाग
एम.जी.एम.डिग्री कॉलेज,संभल (उ.प्र.)

शोध पत्र सार -

भारत सबसे युवा राष्ट्र बनने के लिए तैयार है, लेकिन जब रोजगार का सवाल आता है, तो भारत में नौकरी की उपलब्धता बहुत ही सीमित पाई जाती है और यहां तक कि जब भारत में बड़े पैमाने पर सस्ती जनशक्ति उपलब्ध है और इन स्थितियों का मुकाबला करने के लिए नई नौकरियाँ पैदा की जानी चाहिए। टियर 1 शहरों में हैं नौकरी के प्रचुर अवसर हैं लेकिन टियर 2 और टियर 3 शहरों में इसकी कमी है। दूसरी ओर भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश सकारात्मक है | जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने के लिए भारत सरकार ने एक योजना 'स्टार्टअप इंडिया' की घोषणा की। स्टार्टअप इंडिया अभियान का उद्देश्य स्टार्ट-अप उद्यमों के लिए बैंक वित्तपोषण को बढ़ावा देना जो अंततः उद्यमशीलता को बढ़ावा देता है जिसके परिणामस्वरूप अंततः रोजगार सृजन होता है।

इस में शोध पत्र में, मैंने आत्मनिर्भर भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए वरदान के रूप में देश के आर्थिक विकास हेतु स्टार्टअप की भूमिका और स्टार्टअप योजना से होने वाले लाभों और मुद्दों पर प्रकाश डालना चाहा है।

मुख्य शब्द: अर्थव्यवस्था, स्टार्टअप, रोजगार, वित्त, विकास व् आत्मनिर्भर ।

प्रस्तावना

भारत सरकार ने देश में स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने और भारत को नौकरी देने वालों का देश बनने में मदद करने का फैसला किया है | अब नौकरी तलाशने वाले युवाओं को नौकरी देने वाले बनने की मानसिकता व् क्षमता प्रदान करना सरकार का बड़ा लक्ष्य है जिससे भारत के युवा और पूरा देश आत्मनिर्भर बन सके । भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत के 69वें स्वतंत्रता दिवस समारोह पर इसकी घोषणा की

'स्टार्टअप इंडिया' पहल और उसके बाद, 16 जनवरी, 2016 को नई दिल्ली में स्टार्टअप इंडिया एक्शन प्लान लॉन्च किया गया । मोदी सरकार इस पहल के माध्यम से स्टार्टअप को नवाचार और डिजाइन के माध्यम से आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाना और स्टार्टअप आंदोलन के प्रसार में तेजी लाना है ।

भारत को दुनिया को सस्ता श्रम मुहैया कराने और आईटी के क्षेत्र में भारतीय सेवाओं के निर्यात का बाजार माना जाता था। इसकी वजह भारत ने अतीत में कम उत्पाद विकास और नवाचार देखा है। लेकिन, अभी भी देर नहीं हुई है और स्टार्ट-अप की संस्कृति शुरू हो गई है | हाल के दिनों में भारत.को इसका फल मिलना शुरू हो चुका है और यह लंबे समय में भारतीय अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचाने के लिए तैयार है।

जैसा कि यह सर्वविदित तथ्य है कि जब कोई नया उद्यम शुरू करता है या उद्यमिता में उतरने का प्रयास करता है तो उसे वित्त एकत्र करने जैसी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

भूमि अनुमति, पर्यावरण मंजूरी, विदेशी निवेश प्रस्ताव, पारिवारिक सहायता आदि । यह बहुत जरूरी पहल योजना में से एक है | भारत सरकार की यह पहल अर्थव्यवस्था और उसके विकास में अंतर को भरने पर केंद्रित है और स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, नवाचार, रोजगार सृजन और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ये गतिशील और फुर्तीले उद्यम परिवर्तन के प्रमुख चालक बन गए हैं, उद्यमशीलता की संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं और विभिन्न क्षेत्रों में नए विचारों को शामिल कर रहे हैं।

स्टार्टअप विभिन्न कौशल सेटों में नौकरी के अवसर पैदा करते हैं, युवा, प्रतिभाशाली कार्यबल के एक महत्वपूर्ण हिस्से को अवशोषित करते हैं। इससे न केवल बेरोजगारी कम होती है बल्कि यह भारत के जनसांख्यिकीय लाभ के अनुरूप भी है।

इससे उद्यमियों और आर्थिक स्थिति में काफी सकारात्मकता और विश्वास आया है

भारत।

एक स्टार्टअप व्यवसाय को एक संगठन के रूप में निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है :

- तीन साल या उससे कम समय के लिए निगमित
- सीरीज बी या उससे कम के फंडिंग चरण पर
- एक उद्यमशीलता उद्यम/साझेदारी या एक अस्थायी व्यावसायिक संगठन
- नया और पांच वर्ष से अधिक समय तक अस्तित्व में नहीं

- 25 करोड़ रुपये तक का राजस्व।
- विभाजन या पुनर्गठन के माध्यम से नहीं बनाया गया
- विभाजन या पुनर्गठन के माध्यम से गठित

"स्टार्टअप" की सटीक परिभाषा पर व्यापक रूप से बहस और चर्चा हुई है। हालाँकि, उनके मूल में, अधिकांश परिभाषाएँ यू.एस. के समान हैं। छोटा बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन का वर्णन "एक ऐसे व्यवसाय के रूप में किया जाता है जो आम तौर पर प्रौद्योगिकी संचालित और उन्मुख होता है और इसमें उच्च विकास क्षमता होती है"।

"विकास क्षमता" के संदर्भ का अर्थ राजस्व में वृद्धि, कर्मचारियों की संख्या, या दोनों, या किसी व्यवसाय के विस्तार से हो सकता है। इसके सामान या सेवाएँ व्यापक या बड़े बाज़ार में भी उपलब्ध होती हैं। - स्टार्टअप अक्सर तकनीकी प्रगति में सबसे आगे रहते हैं। नवाचार पर उनका ध्यान नए उत्पादों, सेवाओं और व्यवसाय मॉडल के विकास की ओर ले जाता है, जो भारत में प्रौद्योगिकी क्षेत्र के समग्र विकास में योगदान देता है | स्टार्टअप्स की वृद्धि समग्र आर्थिक परिदृश्य पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। जैसे-जैसे इन उद्यमों का विस्तार होता है, वे सकल घरेलू उत्पाद में योगदान करते हैं, उत्पादकता बढ़ाते हैं और प्रतिस्पर्धी कारोबारी माहौल को बढ़ावा देते हैं।

- **अध्ययन का उद्देश्य:**

1. स्टार्ट-अप इंडिया की अवधारणा का अध्ययन करना।
2. अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए स्टार्ट-अप की सरकारी कार्य योजनाओं का अध्ययन करना।
3. आर्थिक विकास में स्टार्ट-अप की भूमिका का अध्ययन करना।

भारतीय संभावनाओं में स्टार्टअप की भूमिका जो यहाँ की अर्थव्यवस्था के लिए वरदान साबित हो सकती है |

नए और उन्नत विचारों पर काम शुरू करने की अगली पीढ़ी के शानदार चलन के साथ, भारत विश्व मंच पर अन्य सभी देशों से बेहतर प्रदर्शन करने के लिए पूरी तरह तैयार है। आने वाले वर्षों में इन युवा उद्यमियों द्वारा छोटे व्यवसाय स्थापित करने से निश्चित रूप से निकट भविष्य में भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा | NASSCOM* की रिपोर्ट के अनुसार भारत प्रति वर्ष लगभग 3100 स्टार्टअप शुरू करने का घर है, जो अमेरिका, ब्रिटेन और इज़राइल से पीछे है। यदि विकास इसी गति से जारी रहा तो उम्मीद है कि भारतीय टेक स्टार्टअप अगले साल लगभग 2.5 लाख नौकरियां पैदा करेंगे। यह भी कहा जाता है कि भारत जनसांख्यिकीय लाभांश का आनंद ले रहा है और अनुमान है कि जल्द ही भारत 112 मिलियन कामकाजी आबादी का घर होगा ।चीन के 94 मिलियन श्रमिकों की तुलना में 20-24 वर्ष की आयु सीमा में आते हैं। यह जनसांख्यिकीय लाभांश निश्चित रूप से बढ़ावा देगा | भारतीय स्टार्टअप की सफलता प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) को आकर्षित करती है और भारत को नवाचार के केंद्र के रूप में वैश्विक मानचित्र पर रखती है। यह न केवल पूंजी लाता है बल्कि ज्ञान के आदान-प्रदान और वैश्विक सहयोग को भी सुविधाजनक बनाता है।

स्टार्टअप इकोसिस्टम ने नियमों को सरल बनाने, नौकरशाही बाधाओं को कम करने और व्यापार करने में आसानी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतिगत बदलाव और पहल की है। "स्टार्टअप इंडिया" जैसी सरकारी योजनाएं एक सहायक ढांचा प्रदान करती हैं। भारत में कई स्टार्टअप स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और कृषि जैसी सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने पर ध्यान केंद्रित करते

हैं। यह सामाजिक उद्यमिता समावेशी विकास और सतत विकास में योगदान देती है।

प्रारंभ में, भारत को दुनिया को सस्ता श्रम उपलब्ध कराने और आईटी के क्षेत्र में भारतीय सेवाओं के निर्यात के लिए बाजार माना जाता है | फंडिंग के अलावा, विलय और अधिग्रहण भी इन स्टार्टअप कंपनियों को सीधे नई क्षमताएं हासिल करके बढ़ने में मदद कर रहे हैं | अधिग्रहित कंपनी की बाज़ार-हिस्सेदारी में विस्तार किया जाता है । इसका सबसे अच्छा उदाहरण ऐप आधारित भारतीय शॉपिंग पोर्टल की खरीदारी हो सकती है | बाजार हिस्सेदारी हासिल करने के लिए एक अन्य प्रौद्योगिकी दिग्गज फ्लिपकार्ट द्वारा स्नैपडील ने मोबाइल के क्षेत्र में विस्तार करने के लिए हाल ही में फ्रीचार्ज का अधिग्रहण किया है | भुगतान गेटवे, चूंकि मोबाइल भुगतान एक अगला हॉट स्पॉट है जिसे विभिन्न स्टार्टअप्स ने महसूस किया है जो आगे के लिए अपार अवसर प्रस्तुत कर रहा है |स्टार्टअप मेंटरशिप, नेटवर्किंग और ज्ञान-साझाकरण को बढ़ावा देकर एक संपन्न उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र बनाते हैं। यह पारिस्थितिकी तंत्र नए विचारों को पोषित करने और स्टार्टअप को चुनौतियों से उबरने में मदद करने के लिए आवश्यक है।

स्टार्टअप अक्सर स्थापित उद्योगों को चुनौती देते हैं, उन्हें अनुकूलन और नवाचार करने के लिए मजबूर करते हैं। इस व्यवधान से दक्षता में वृद्धि, बेहतर सेवाएँ और बेहतर उपभोक्ता अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। फिनटेक स्टार्टअप्स ने, विशेष रूप से, बैंकिंग, भुगतान और उधार के लिए नवीन समाधान प्रदान करके, वंचित आबादी तक पहुंचकर वित्तीय समावेशन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्टार्टअप संस्कृति लचीलेपन और अनुकूलनशीलता को प्रोत्साहित

करती है। तेजी से विकसित हो रही वैश्विक अर्थव्यवस्था में स्टार्टअप तेजी से आगे बढ़ते हैं और बदलाव को अपनाते हैं, ये आवश्यक गुण हैं।

न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तकनीकी दिग्गजों ने कंपनियों के अधिग्रहण को अपनी स्थिति बनाए रखने के तरीके के रूप में इस्तेमाल किया है | स्टार्टअप, मार्केट लीडर और विविधीकरण को बढ़ाने के एक शानदार तरीका है | यह मोबाइल या ऑनलाइन भुगतान के लिए गेटवे के विकास के क्षेत्र में अवसर प्रदान करता है । यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत बनने के लिए पूरी तरह तैयार है | संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद 2023 तक स्मार्टफोन के लिए दूसरा सबसे बड़ा बाजार बन जायेगा । ऐसा मुख्य रूप से किफायती स्मार्टफोन की बढ़ोतरी के कारण होने जा रहा है | देश में साल 2014 में ही इस सेक्टर में करीब 50 फीसदी की बढ़ोतरी देखी गई।

2020 में कोरोना काल के दौरान ऑनलाइन लेनदेन भी तीव्र गति से बढ़ा जिससे भारतीय स्टार्टअप्स के लिए बड़े अवसर सामने आए । स्टार्टअप जैसे पेटीएम, इनमोबी, फ्रीचार्ज आदि ने पहले ही इस बाजार को कवर करना शुरू कर दिया था । भारत सरकार भी स्टार्टअप के लिए उपयुक्त माहौल बनाने के लिए कई कदम उठा रही है, क्योंकि छोटे व्यवसाय बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं

भारत में स्टार्टअप का परिदृश्य:-

1) भारत तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप हब है।

2) स्टार्टअप संस्थापकों की औसत आयु 28 वर्ष है।

3)कुल स्टार्टअप संस्थापकों में से 9% महिलाएं हैं|

4) कुल तकनीकी स्टार्टअप 2015 में 4300 से बढ़कर 2023 में 13500 होने की उम्मीद है।

5) नई प्रौद्योगिकी स्टार्टअप की औसत संख्या 2010 में 480 से बढ़कर 2015 में 800 हो गई है। 2023 में बढ़कर 2400 होने की उम्मीद है।

6) अधिकांश स्टार्टअप और निवेशक मेट्रो शहरों से हैं।

7) पिछले 12 महीनों में महिला उद्यमियों की हिस्सेदारी में लगभग 50% की वृद्धि।

8) पिछले 12 महीनों में निजी इक्विटी और वेंचर कैपिटल फर्मों की संख्या दोगुनी हो गई है।

स्टार्टअप के मामले में भारत दुनिया के शीर्ष पांच देशों में शामिल है। 83,000+ स्टार्टअप के साथ अमेरिका इस सूची में पहले स्थान पर है।

भारत में लगभग 10000 स्टार्टअप हैं | टेक्नोलॉजी आधारित स्टार्टअप्स में सबसे ज्यादा फोकस ई-कॉमर्स सेक्टर (33%) में है।

इसके बाद बी2बी क्षेत्र (24%), उपभोक्ता इंटरनेट (12%) और अन्य क्षेत्रों में 13% शामिल हैं। दूसरी ओर, गैर प्रौद्योगिकी आधारित में

स्टार्टअप्स में अधिकतम एकाग्रता इंजीनियरिंग क्षेत्र (17%) में है, इसके बाद कृषि उत्पाद क्षेत्र (13%) और अन्य क्षेत्र शामिल हैं 32%.|

इसलिए, उपरोक्त सभी विकासों को ध्यान में रखते हुए, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि स्वदेशी स्टार्टअप न केवल लोगों का जीवन बनाएंगे बल्कि देश की अर्थव्यवस्था के लिए वरदान साबित होंगे | ये न केवल अपनी सस्ती और सुविधाजनक सेवाओं के माध्यम से लोगों के लिए बहुत बड़ी सुविधा साबित होंगे बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था हेतु विकास और प्रगति के लिए एक प्रमुख बूस्टर के रूप में भी कार्य करेंगे |

.

निष्कर्ष एवं सुझाव:

भारत में स्टार्टअप आर्थिक परिवर्तन के उत्प्रेरक हैं। उनका प्रभाव वित्तीय मैट्रिक्स से परे, उद्यमशीलता मानसिकता, तकनीकी परिदृश्य और सामाजिक कल्याण को प्रभावित करता है। जैसे-जैसे स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र विकसित हो रहा है, भारतीय अर्थव्यवस्था को आकार देने में इसकी भूमिका बढ़ने की उम्मीद है, जो देश को सतत विकास की ओर आगे बढ़ाएगी। स्टार्टअप्स इंडिया जैसे अभियान भारत में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन भारतीय स्टार्टअप्स में कुछ खामियाँ भी देखी जा सकती हैं, जो इस प्रकार हो सकती हैं -

उद्यमिता एक दिन में विकसित नहीं हो सकती। एक सफल उद्यमी को विकसित करने के लिए उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है और इसका कुशल प्रशिक्षण होना भी चाहिए | इसकी शुरुआत शिक्षण संस्थान से ही की जाए, जिसमें भारत पीछे है । उद्योगों और शिक्षाविदों दोनों को एक साथ आना चाहिए |

सतत विकास के लिए युवाओं में उद्यमी कौशल विकसित करें। दूसरे, जब स्टार्टअप की बात आती है तो 90% वेंचर्स पूंजी का लाभ होता है | एफडीआई के स्वरूप में, इस परिदृश्य को बदला जाना चाहिए ताकि स्टार्टअप को अपना वित्तीय समर्थन अधिक आसानी से मिल सके। इसके अलावा उचित बुनियादी ढांचा स्टार्टअप के लिए टियर 1 शहरों में देखा जा सकता है, लेकिन टियर 2 और टियर 3 शहरों में यह गायब है, जो समावेशी विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

स्टार्टअप्स 'इंस्पेक्टर राज' को दरकिनार करने में मदद करते हैं जो एक अच्छा कदम है लेकिन सरकार के गंभीर विनियमन आज भी देखे जाते हैं | व्यवसाय जो एक प्रमुख कारण है कि युवा नौकरी चाहने वालों के रूप में जाना

चुनते हैं न कि नौकरी देने वाले के रूप में। यह देखा गया है कि उचित ऊष्मायन केंद्र गायब है, और समाधान के रूप में एनआईटी, आईआईटी और आईआईएम जैसे सर्वोच्च रैंकिंग वाले शैक्षणिक संस्थानों को इस तरह के विकास के लिए सामने आना चाहिए | इसके अलावा सरकार को लोगों की उद्यमिता में रुचि पैदा करने के लिए उनकी मानसिकता को बदलने की पहल भी करनी चाहिए |

ऐसी नीतियां बनाई जाएँ जिससे सरकारी नौकरियों को प्राथमिकता देने के बजाय अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने की मानसिकता के विकास पर बल दिया जाना चाहिए । भारतीय अर्थव्यवस्था को अधिक अर्थों में विकसित करने के लिए पाई जाने वाली खामियों को दूर किया जाना चाहिए। अधिक टिकाऊ अर्थव्यवस्था प्राप्त करने का एक मात्र उचित तरीका नए व्यवसायों को महत्व देना ही है |स्टार्टअप भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, नवाचार, रोजगार सृजन और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ये गतिशील और फुर्तीले उद्यम परिवर्तन के प्रमुख चालक बन गए हैं, उद्यमशीलता की संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं और विभिन्न क्षेत्रों में नए विचारों को शामिल कर रहे हैं।

सन्दर्भग्रंथ सूची -

1. बंसल, आर. (2008)। स्टे हंग्री स्टे फ़ूलिश। आईआईएम अहमदाबाद।

2. गुइलेब्यू, सी. (2012)। $100 स्टार्टअप। क्राउन बिजनेस .

3. मित्रा, एस. (2016)। स्टार्टअप इंडिया: स्टैंड अप इंडिया। ऋषि प्रकाशन।

4. थिएल, पी., और मास्टर्स, बी. (2014)। शून्य से एक. क्राउन बिजनेस.

5. रीस, ई. (2011)। द लीन स्टार्टअप। क्राउन बिजनेस.

6. कौल, वी. (2017)। भारत की बड़ी सरकार: घुसपैठिया राज्य और यह हमें कैसे नुकसान पहुंचा रहा है। हार्पर कॉलिन्स भारत।

7. वैथीश्वरन, के. (2017)। सफलता में असफलता: भारत की पहली ई-कॉमर्स कंपनी की कहानी। वेस्टलैंड.

8. राजन, एम. (2020)। ब्रांड संरक्षक: टाटा के साथ मेरे वर्ष। हार्पर कॉलिन्स भारत।

9. रॉय, एस.एस., और बंगाली, एस.ए. (2017)। भारत के स्टार्टअप: निगमन, वित्त पोषण, मूल्यांकन और निकास रणनीतियाँ। नोशन प्रेस.

10. सौरभ, एस. (2017)। उद्यमी मन के लिए कर्म कुरी। ब्लूम्सबरी भारत।